वर्ष 25, अंक 1 Sr. 428, मुंबई, जनवरी 2026, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

झीलवाडा में संयम संवेदना दि. 15-12-2025

सादडी नगर में भव्य प्रवेश दि. 23-12-2025

पुस्तक विमोचन

संयम संवेदना

-: संपादक एवं प्रकाशक :-

सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.

M. 84 84 84 84 51 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

रत्न संदेश

लेखक :-
प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

521 सुख का उपाय

किसी से भी सुख की अपेक्षा न रखें
और किसी के दु:ख की उपेक्षा न करें,
सुखी होने का यह सच्चा राजमार्ग है ।
आज प्रत्येक व्यक्ति की तीव्र अभिलाषा
सुख पाने और दु:ख से मुक्त
बनने की है, परंतु आश्चर्य है कि
वह सुख पाने के लिए और दु:ख से
छुटकारा पाने के लिए दूसरों से अपेक्षा भाव
छोड़ने के लिए तैयार नहीं है ।

522 सच्चा सुख

भौतिक सुख, सातावेदनीय कर्म के उदय से
प्राप्त होता है, जब कि आध्यात्मिक
सुख कर्म के क्षय से प्राप्त होता है ।
कर्म के उदयजन्य सुख
अस्थायी होता है, जब कि
कर्म के क्षय से जन्य सुख शाश्वत होता है ।
उस शाश्वत सुख को पाने के लिए
हमारा निरंतर प्रयत्न होना चाहिए ।

जनवरी 2026 से दिसंबर 2026 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **एक सद्गृहस्थ**-कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से
  अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता-मुंडारा-बोरीवली
- **स्व.मातुश्री रतनबाई जिन्नालालजी फागणिया**-लुणावा-मुंबई
- **मातुश्री शांतिबेन पुखराजजी उमाजी करमाजी**-भंदर
  शांतिकमल-मुंबई

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : **प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)
विहार में संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942

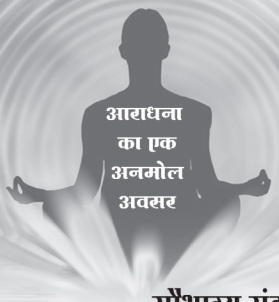

।। श्रीं वासुपूज्य स्वामिने नमः ।।
।। श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषण सूरिभ्यो नमः ।।

हमारे परिवार के उपकारी मरुधर रत्न,
पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.
के संयम जीवन के स्वर्णिम वर्ष की अनुमोदनार्थ
सुमेरपुर (राज.) की धन्यधरा पर
श्री वासुपूज्य श्वेतांबर जैन संघ (भैरु चोक) की आज्ञा से
सौभाग्य सुंदर परिवार (मातुश्री सुंदरबाई दिनेशकुमारजी धर्मचंदजी) आयोजित
विशाल पैमाने में चैत्र मास की सामुदायिक ओली में पधारने के लिए

गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश, चैत्र सुदी 4, रविवार दि. 22-03-2026 गांधी चौक से

भावभरा हार्दिक आमंत्रण

-: शुभ निश्रा :-

दीक्षा युग प्रवर्तक पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न अध्यात्मयोगी
पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के कृपा पात्र चरम शिष्यरत्न गोडवाड के गौरव,
मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा-5
एवं दीर्घ संयमी पू.सा.श्री समर्पणलीनाश्रीजी आदि ठाणा-4

पू. साध्वी श्री निर्मलरेखाश्रीजी एवं सा. श्री निर्वेदरेखाश्रीजी की सांसारिक बहन एवं
हमारी सांसारिक माताजी पूज्य साध्वी श्री चैतन्यरेखाश्रीजी की शुभ प्रेरणा से चौथी बार
शाश्वती नवपद ओली का लाभ सौभाग्य सुन्दर परिवार सुमेरपुर-मुंबई को मिला है ।

-: उत्तर पारणा :-
चैत्र सुदी-6, मंगलवार
दि. 24-03-2026

-: ओली प्रारंभ :-
चैत्र सुदी-7, बुधवार
दि. 25-03-2026

-: तपस्वियों का पारणा :-
वैशाख वदी-1, शुक्रवार
दि. 03-04-2026

विशेष आकर्षण :- (1) बाहर से पधारने वाले **150** आराधकों के आवास-निवास की सुंदर व्यवस्था होगी ।
(2) बाहर से पधारनेवाले आराधकों को आने-जाने का भाडा (अधिकतम **1000** रु.) भेट दिया जाएगा ।
(3) पूज्यश्री के नवपद विषयक प्रेरणादायी हिन्दी प्रवचन होंगे ।
(4) अनेकविध आराधना अनुष्ठान-भक्ति संगीत आदि ।
(5) आराधक अपना फॉर्म भरकर दि. **1** मार्च तक अवश्य सुमेरपुर पेढी में जमा कराए ।
आपको तुरंत ही **Whatsapp Number** से सूचित किया जाएगा ।
(6) सुमेरपुर आने के लिए पश्चिम रेल्वे के जवाई बांध स्टे. पर उतरना है,
वहाँ से सुमेरपुर **10** कि.मि. है । वहाँ से टेंपो व बस की सुविधा है ।

फॉर्म हेतु निम्न पत्ते या **Mobile No.** से **Contact** करें ।
(1) वासुपूज्य मंदिर पेढी, सुमेरपुर, मुनिम कांतिलाल **M. 81080 95743**
(पोपटलाल जैन **M. 94144 63710**)
(2) जितेन्द्र दिनेशजी, दीपक ज्योति टॉवर, मुंबई (**M. 90229 52416**)
(3) चेतन दिनेशजी-दीपक ज्योति टॉवर-मुंबई **M. 98694 73312**
(4) जयंतिलाल **M. 78777 33744**
(5) किशोर राणावत **M. 99208 44891** (6) सहदेव (सेवक) (**M. 98672 04942**)

• नवपद ओली स्थल •
जैन मंदिर के पास
भैरुचोक सुमेरपुर

आवेदन पत्र

आराधक का नाम _____ पुरुष / स्त्री _____ उम्र _____
पत्ता _____
धार्मिक अभ्यास _____ M.No. _____

ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक,
निःस्पृह शिरोमणि, प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर

श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

संपादक : जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज

4 वाचनाओं के कतिपय अंश

–वाचना दाता : पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.

हमें ही नहीं, कई बार बड़े विद्वानों को भी भगवान की करुणा समझ में नहीं आयी, सिद्धर्षि जैसे विद्वान को भी समझ में नहीं आयी थी । इसीलिए वे बौद्ध दर्शन के प्रति आकर्षित हुए थे । **बुद्ध महान् कारुणिक दिखाई दिये, अरिहंत मात्र वीतराग ही दिखाई दिये ।**

यह तो भला हो **'ललित विस्तरा ग्रंथ'** का कि जिसके योग से उन्हें भगवान की परम करुणा समझ में आयी और वे जैन-दर्शन में स्थिर हुए ।

भला हो पूज्य पंन्यासजी श्री भद्रंकरविजयजी महाराज का, कि जिन्होंने हमें इन 'ललित विस्तरा' आदि ग्रन्थों के द्वारा भगवान की करुणा समझाई, अन्यथा पता नहीं हम कहां होते ?

करुणा-सिन्धु प्रभु की करुणा निरन्तर नजर के समक्ष रखोंगे तो आपके हृदय में भक्ति की लहर उठे बिना नहीं रहेगी, सचमुच, यदि भीतर **'हृदय'** नामक वस्तु होगी तो । पत्थर में तरंगें उत्पन्न नहीं होती, परंतु पानी में तरंगें उत्पन्न न हो, यह कैसे होगा ? हमारा हृदय पत्थर है या पानी ?

पानी के समान मृदु हृदय में ही भक्ति का जन्म होगा । भक्ति का जन्म होगा तो ही धर्म प्राणवान बनेगा ।

जब तक प्रभु के दर्शन न हो तब तक चैन से न बैठें । प्रभु को पुकारते ही रहें, प्रार्थना करते ही रहें ।

ये दयालु प्रभु आपको निश्चित रूप से दर्शन देंगे ।

यहां से नहीं मिलेंगे तो कहां मिलेंगे ? यहां से नहीं मिले तो कहीं से भी नहीं मिलेंगे । अनन्य भाव से शरणागति स्वीकार करें । भक्ति में सातत्य रखें, फिर फल देखें । अपनी कमजोरी यह है कि सातत्य नहीं होता । सातत्य के बिना कोई भी अनुष्ठान सफल नहीं होता ।

मैं **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.** को अनेक बार पूछता : ***आपके बाद हमारा क्या होगा ? हमें कौन मार्ग-दर्शन देगा ? सद्गुरु को कैसे पहचानें ?' वे कहते, 'जो अपने सद्गुरु एवं भगवान को याद करते हुए गद्गद हो जाये वे सद्गुरु है, यह मानें; ज्ञान न देखें...'***

केवल अष्टप्रवचन-माता का ज्ञान चलेगा, परन्तु वह प्रभु में तन्मय बना हुआ होना चाहिये । वह व्यक्ति सब कुछ दे सकता है । केवल ग्रहण करने वाले को खाली होने की आवश्यकता है ।

❖ प्रकाम-तीव्र, निकाम - बार बार की छोटी-छोटी इच्छाओं में से मुक्त होना है । इसके बिना गुरु के प्रति समर्पण नहीं आता । इच्छा आ गई तो समर्पण गया ।

पेट्रोल से मोटर दौडती है, उसी प्रकार प्रभु की शक्ति से हम धर्म-क्रिया कर रहे हैं - यह मानें तो ही सच्चा धर्म बनता है ।

'शिष्यस्य सर्वं गुर्वायत्तम् ।

'गुरोः सर्वं परमायत्तम्' ।

परम (प्रभु) के अधीन न हो वह गुरु ही नहीं है । प्रभु गुरु के बिना सीधे नहीं मिल सकते, पंचसूत्र में स्पष्ट कहा है ।

इच्छाओं से निरावरण बनने वाले ही गुरु के कृपा-पात्र बन सकते हैं । मुझे कुछ नहीं करना है । गुरु कहें वही करना है ।

पकड़ती है पुलिस, परन्तु सचमुच सरकार पकड़ती है ।

करते हैं धर्म हम, परन्तु कराते हैं प्रभु । गुरु प्रभु के माध्यम हैं ।

❖ उचित वृत्ति के पांच लक्षण :

(1) लोकप्रियता ।

(2) अगर्हित क्रिया : इसलोक-परलोक के विरुद्ध कार्य ही न हो कि कोई निन्दा करे ।

(3) संकट के समय धैर्य ।

(4) शक्ति के अनुसार त्याग ।

(5) लब्ध लक्षता - जो ध्येय निश्चित किया हुआ हो वह न मिले तब तक बैठा न रहे ।

ये पन्द्रह गुण मिलते हों वैसे अधिकारी जिज्ञासु को यह पाठ देना, अन्यथा दोष लगता है ।

❖ पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. कहते थे कि एक नवकार बराबर आत्मसात् करें तो भी पर्याप्त है ।

एक नवकार सूत्र, अर्थ, तदुभय से आत्मसात् करने के लिए द्वादशांगी की आवश्यकता होगी ।

तदुभय अर्थात् जैसा पढ़े हैं वैसा जीवन में उतारना । ज्ञानाचार का यह भेद होने पर भी यह चारित्राचार हो वैसा लगे । ज्ञ परिज्ञा और प्रत्याख्यान परिज्ञा, ग्रहणशिक्षा एवं आसेवन शिक्षा । यहां प्रत्याख्यान परिज्ञा से तथा आसेवन शिक्षा से जीवन जीने की बात ही आयी है ।

चार भावनाओं में भी मुख्य मैत्री भावना है । शास्त्रों में यह कहां आता है, यह न पूछें । **'खामेमि सव्वजीवे ।'** क्या नित्य नहीं बोलते ? क्या यह शास्त्र नहीं है ?

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि द्रव्य के रूप में एक है, उसी प्रकार जीवास्तिकाय भी एक ही द्रव्य (जीव अनन्त होते हुए भी) है, इस तरह **'भगवती सूत्र'** में उल्लेख है ।

यहां देखें, जीवास्तिकाय में निगोद से लगाकर सिद्धों के समस्त जीवों का संग्रह हो चुका है । एक भी जीव बाकी नहीं है ।

'जीवास्तिकाय अनन्त प्रदेशी है' यह पढ़कर तनिक शंका हुई कि कहीं अशुद्ध तो नहीं है ? परन्तु बाद में ध्यान आया कि 'अरे ! यह तो समस्त जीवों की बात है । समस्त जीव अनन्त हों तो उनके प्रदेश भी अनन्त ही होंगे न ! जीवास्तिकाय द्रव्य से एक, क्षेत्र से लोकव्यापी, काल से सर्वदा है और रहेगा ।

पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. कहते, 'उपयोगो लक्षणम्' यह स्वरूप दर्शक लक्षण है । 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' यह सूत्र जीव का सम्बन्ध दर्शक लक्षण है । 'एक दूसरे के बिना जी नहीं सकते' यह बताने वाला यह लक्षण है । आप दूसरों को अपने समान समझते नहीं है, जान कर उनकी रक्षा करने का प्रयत्न करते नहीं, तब तक मोक्ष नहीं मिलेगा, भले चाहे जितना ध्यान धरो । पहले हृदय में सभी जीवों के प्रति मैत्री चाहिये ।

❖ आज तक भगवती सूत्र का पाठ चलता था । महात्मा ने पूछा, **'अभी सामूहिक वाचना होगी तब क्या बोलना ? क्या उसकी चिन्ता नहीं है?'**

मैंने कहा, **'ये भगवान जैसा बुलवायेंगे, वैसा बोलूंगा ।'** (सामने ही भगवान का चित्र था, उस ओर देखकर कहा ।)

अहंकार न आये अतः भगवान को निरन्तर सामने रखें ।

सच्चा ज्ञानी अपनी ऋद्धि का गर्व नहीं करता, अन्य अज्ञानियों का उपहास नहीं करता, व्यर्थ विवाद नहीं करता, भोले मनुष्यों में बुद्धि-भेद नहीं करता, समझदार व्यक्तियों को वह समझाता है, दूसरों को नहीं ।

इसका नाम ही पात्रता है ।

पूज्य पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. हमें अनेक बार पूछते - आपको क्या बनना है ? वक्ता या पण्डित ? प्रभावक या आराधक ? गीतार्थ या विद्वान ? तत्पश्चात् वे कहते - आराधक, गीतार्थ बनें ।

पू. नूतन आचार्यश्री : 'आपने तो पूछ लिया होगा ?'

पूज्यश्री :– मैंने तो पहले से ही निश्चित कर लिया था, पूछने की आवश्यकता ही नहीं थी ।

मैं उन्हें वन्दन करता । वे मुझे इन्कार करते, वे कहते - आप आचार्य है, आप वन्दन नहीं कर सकते; परन्तु मैं कहता - इस समय मैं आचार्य नहीं हूं, विद्यार्थी हूं, शिष्य हूं; तो भी पाट पर तो मुझे समीप ही बिठाते । उनकी उपस्थिति में मैं प्रवचन भी करता ।

(क्रमशः)

महावीर प्रभु की पट्टधर-परंपरा

-: लेखक :-
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

वीर प्रभु के प्रथम शिष्य

लब्धि निधान श्री गौतमस्वामी

दीक्षा पर्याय–50 वर्ष ※ आयुष्य–92 वर्ष ※ निर्वाण–वीर संवत् 12

आत्मा के बिना संशय नहीं :–

संशय भी एक प्रकार का ज्ञान ही है । संशयी के बिना संशय नहीं होता है, अतः संशय करनेवाली आत्मा ही है ।

अमूर्त गुण का आश्रय (आधार) अमूर्त आत्मा है :–

देह मूर्त है, जड है, अचेतन है, जबकि ज्ञान गुण तो अमूर्त है । अमूर्त का आधार मूर्त कैसे हो सकता है ?

ज्ञान अमूर्त है अतः उसका आधार अमूर्त ऐसी आत्मा ही हो सकती है ।

गुण का प्रत्यक्ष अनुभव होने पर गुणी भी प्रत्यक्ष ही कहलाता है ।

ज्ञान गुण का सभी को प्रत्यक्ष अनुभव है, अतः आत्मा भी प्रत्यक्ष ही कहलाएगी ।

घडे के रूप का प्रत्यक्ष ज्ञान होने पर घडा भी प्रत्यक्ष ही कहलाता है उसी प्रकार स्मृति, जिज्ञासा, संशय आदि का प्रत्यक्ष अनुभव होने पर आत्मा भी प्रत्यक्ष ही कहलाती है ।

हे गौतम ! तुम छद्मस्थ होने से तुम्हें किसी भी वस्तु का ज्ञान आंशिक रूप से है, परंतु अनंतज्ञान–केवलज्ञान से युक्त होने से मुझे संपूर्ण रूप से यह आत्मा प्रत्यक्ष है ।

अन्य शरीर में आत्मा का अनुमान :–

अपने शरीर की तरह अन्य शरीर में रही हुई ज्ञान स्वरूप आत्मा को अनुमान से जान सकते है ।

जिस प्रकार हम अनुकूल वस्तु में प्रवृत्ति और प्रतिकूल वस्तु से दूर भागते हैं, उसी प्रकार अन्य प्राणी को भी अनुकूल वस्तु में प्रवृत्ति करते हुए और प्रतिकूल वस्तु से दूर भागते हुए देखकर उसके शरीर में भी हमारी जैसी ही आत्मा का अनुमान कर सकते है ।

शरीर का कर्ता जीव है :–

निश्चित आकारवाली वस्तु का कर्ता जीव ही है ।

उदा. घडा बनने का प्रारंभ होता है और उसका एक नियत आकार बनता है, तो उसको बनानेवाला कुम्हार (जीव) ही है ।

उसी प्रकार इस शरीर के निर्माण का भी प्रारंभ होता है और यह शरीर निश्चित आकारवाला बनता है तो इसको बनानेवाला जीव ही सिद्ध होता है । आकाश में बादल भी बनते है परंतु उनका कोई निश्चित आकार नहीं है, अतः उनको बनानेवाला कोई जीव नहीं है । मेरु पर्वत का निश्चित आकार है, परंतु उसका प्रारंभ काल नहीं है, अतः उसको बनानेवाला जीव नहीं है ।

क्या शरीर को बनानेवाला ईश्वर है ?

नहीं !

जो भगवान कृतकृत्य होकर सभी कर्मों का क्षयकर मोक्ष में चले गए है, वे भी यह शरीर नहीं बनाते है, क्योंकि वे परमात्मा राग-द्वेष से रहित होने से उन्हें भी यह शरीर बनाने का कोई प्रयोजन नहीं है ।

संसारी जीव राग-द्वेष से युक्त है, इसी कारण वह शरीर बनाता है ।

प्रश्न : आत्मा है तो वह दिखती क्यों नहीं है ?

उत्तर : हमारे चारों ओर वायु होने पर भी वह आंखों से दिखाई नहीं देती है, फिर भी उसका अनुभव से अस्तित्व मानते है । उसी प्रकार आत्मा आंखों से दिखाई नहीं देने पर भी उसकी चेष्टाओं के आधार पर आत्मा का अस्तित्व सिद्ध होता है ।

जींदे शरीर में हलन-चलन आदि सभी चेष्टाएं दिखाई देती हैं, जबकि मृत शरीर में किसी प्रकार की चेष्टाएं नहीं होती हैं ।

इन्द्रियों का अधिष्ठाता आत्मा है :–

आंख देखने का साधन है, कान सुनने का साधन है परंतु उन साधनों से काम लेनेवाली तो आत्मा ही है ।

शरीर में आत्मा हो तो हम आंख से देख सकते हैं, कान से सुन सकते हैं, जीभ से चख सकते हैं । शरीर में आत्मा न हो तो आंख होने पर भी दिखाई नहीं देता है, कान होने पर भी सुनाई नहीं देता है । मृत शरीर में आंख है, कान है, जीभ है, परंतु उसे न दिखाई देता है, न सुनाई देता है, क्योंकि वहां आत्मा नहीं है ।

विद्यमान वस्तु का ही संशय होता है ।

जो वस्तु जगत् में विद्यमान हो उसी की शंका होती हैं, जो वस्तु जगत् में कहीं न हो उसकी शंका भी नहीं होती है ।

वंध्या स्त्री को पुत्र नहीं होता है, अतः उसके बारे में किसी को शंका भी नहीं होती है ।

गधे के सिंग नहीं होती है, अतः उसके बारे में किसी को शंका भी नहीं होती है ।

वेद की पंक्ति का अर्थ

विज्ञानघन=विज्ञान अर्थात् उपयोग ! यह उपयोग दो प्रकार का है । सामान्य उपयोग और विशेष उपयोग । सामान्य उपयोग को दर्शन कहते है और विशेष उपयोग को ज्ञान कहते है । आत्मा में दोनों प्रकार के उपयोग रहे है अतः आत्मा को **विज्ञानघन** कहते है ।

यह विज्ञान पृथ्वी आदि भूतों में से पैदा होता है । इसका अर्थ हैं जब घट, वस्त्र, पानी आदि का ज्ञान होता है, तो उपचार से कह सकते है कि यह ज्ञान घट आदि में से उत्पन्न हुआ ।

जब हम घट को देखते है तो हमें घडे का ज्ञान होता है, इसका अर्थ हुआ, **'घडे से ज्ञान उत्पन्न हुआ ।'** उसके बाद जब हम वस्त्र को देखते है तो हमारा घडे का ज्ञान–उपयोग नष्ट हो जाता है और वस्त्र का ज्ञान–उपयोग उत्पन्न होता है ।

इससे स्पष्ट होता है कि भूतों के निमित्त से आत्मा में अलग- अलग प्रकार का ज्ञान पैदा होता है, फिर आत्मा का उपयोग बदल जाने पर पूर्व का उपयोग नष्ट हो जाता है ।

इसलिए कहते हैं-**'एतेभ्यः भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति !'**

'न प्रेत्यसंज्ञा अस्ति' इसका अर्थ है कि जब अपना उपयोग एक वस्तु को छोड अन्य वस्तु में चला जाता है, तब पूर्व की ज्ञान संज्ञा नहीं रहती है ।

विज्ञान भूतों का धर्म नहीं है :–

विज्ञान भूतों का धर्म नहीं है, भूतों के अभाव में भी विज्ञान हो सकता है । वेद में कहा है- **'अस्तमिते आदित्ये याज्ञवल्क्य !' चन्द्रमस्तमिते, शान्तेग्नौ शान्तायो वाचि किं ज्योतिरेवायं पुरुषः ? आत्मज्योतिरेवायं सम्रादिति ।'**

अर्थ : हे याज्ञवल्क्य ! जब सूर्य अस्त हो जाता है, चंद्र अस्त हो जाता है, अग्नि शांत हो जाती है, वचन शांत हो जाता है । तब पुरुष में कौनसी ज्योति होती है ? हे सम्राट् ! उस समय आत्म–ज्योति रहती है । यहां पुरुष का अर्थ आत्मा और ज्योति का अर्थ है ज्ञान ।

इसका अर्थ है जब अन्य सभी प्रकाश अस्त हो जाते हैं, तब आत्मा में ज्ञान रूप प्रकाश रहता हैं अर्थात् ज्ञान यह भूतों का धर्म नहीं है ।

मुक्त अवस्था में भूतों का अस्तित्व नहीं होता है, फिर भी वहां आत्मा में अनंत ज्ञान होता है ।'

महावीर प्रभु के मुख से इन युक्तिसंगत वचनों को सुनकर इन्द्रभूति के मन के भीतर आत्मा के अस्तित्व के विषय में रहा संदेह दूर हो गया ।

प्रभु के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन कर वे प्रभु से प्रार्थना करने लगे, **'हे प्रभु ! आपके तर्क युक्त शास्त्र–वचनों को सुनकर मैं संदेहमुक्त हो चूका हूँ । मैं आपके चरणों में अपना जीवन समर्पित करना चाहता हूँ । अपना शिष्य बनाकर मुझे मुक्ति का सत्य मार्ग बतलाने की कृपा करें ।**

इन्द्रभूति की इस नम्र प्रार्थना का प्रभु ने सहर्ष स्वीकार किया ।

प्रभु ने उन्हें भागवती दीक्षा प्रदान की । इन्द्रभूति की भागवती दीक्षा के साथ ही इन्द्रभूति के 500 शिष्यों ने भी भागवती दीक्षा अंगीकार कर ली ।

अभिमान के शिखर पर इन्द्रभूति । नम्रता के शिखर पर गौतम ।।

ज्ञान जब पचता है तो जीवन में नम्रता आती है और ज्ञान का जब अजीर्ण हो जाता है, तब अहंकार पैदा होता है ।

50 वर्षीय सुवर्ण वर्णीय इन्द्रभूति 14 विद्याओं में पारगामी थे, परंतु उस ज्ञान को वे पचा नहीं पाए थे, इस कारण उन्हें अपने ज्ञान का खूब खूब अभिमान था ।

वे अपने आपको सर्वज्ञ मानते थे, जबकि उनकी अंतरात्मा में ही **'आत्मा'** के अस्तित्व के विषय में पूरा पूरा संदेह था । वे अपने संदेह का निराकरण करने के लिए किसी को पूछते भी नहीं थे ।

क्योंकि यदि वे किसी को पूछने जाय तो यह सिद्ध हो जाय कि वे सर्वज्ञ नहीं है । वे अपनी इस कमजोरी को किसी के सामने प्रकट करना नहीं चाहते थे ।

यद्यपि प्रभुवीर के सामने भी वे अभिमान से ही गए थे । प्रभुवीर ने उन्हे प्रेम से पुकारा **'इन्द्रभूते ! सुखेन आगतोऽसि ?'** हे इन्द्रभूति ! तुम सुखपूर्वक आए हो ।

प्रभुवीर की इतनी सरलता, वाणी में मधुरता होने पर भी इन्द्रभूति का अभिमान दूर नहीं हुआ, परंतु जब वीर प्रभु ने उनके भीतर रही आत्म तत्त्व विषयक शंका का निराकरण किया तो तत्क्षण वे अभिमान के शिखर से नीचे उतर आए, वे अत्यंत ही नम्र बन गए ।

अभिमान के शिखर पर रहे व्यक्ति को वहां से एकदम नीचे उतर जाना, कोई सामान्य बात नहीं है ।

आध्यात्मिक जगत् में इन्द्रभूति की यह सबसे बडी उपलब्धि थी कि वे अभिमान के शिखर पर से तत्काल उतरकर तलहटी पर आ गए और इसके साथ ही नम्रता के शिखर पर आरूढ़ हो गए ।

14 विद्याओं में पारगामी ऐसे गौतम भी अब अपने आपको एक तुच्छ अज्ञानी बालक समझने लगे । **'अहो ! मैं कितना अज्ञानी हूँ !'** मैं कुछ नहीं जानता हूँ । इस प्रकार वे अत्यंत विनम्र बन गए ।

प्रभु महावीर के प्रति वे पूर्ण समर्पित बन गए । जिस प्रकार दूध में पानी डालने पर पानी भी दूध जैसा बन जाता है और पानी का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहता है । उसी प्रकार दीक्षा के साथ ही गौतमस्वामी प्रभुवीर को पूर्ण समर्पित बन चूके थे ।

जिंदगी भर गौतम स्वामी एक बालक की भांति रहे ।

अन्तर्मुहूर्त में द्वादशांगी के रचयिता

तिजोरी में लाखों रूपए क्यों न हो, परंतु चाबी हाथ में नहीं है तो उन रूपयों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? तिजोरी में बंद पडे खजाने को पाने के लिए हाथ में चाबी जरूरी है ।

आत्मा में रहे श्रुतज्ञान के अमूल्य खजाने को पाने के लिए गुरुकृपा चाबी का काम करती है ।

अपनी शंकाओं के समाधान के साथ में ज्योंहि इन्द्रभूति, भगवान महावीर के प्रति समर्पित हुए, त्योंहि प्रभु महावीर ने उन्हे चारित्र धर्म प्रदान किया ।

गौतम स्वामी ने वंदन करके प्रभु महावीर को पूछा, **'भयवं ! किं तत्तं !'**

भगवान ने कहा-**'उपन्ने इ वा'**

फिर वंदन कर पूछा **'भयवं ! किं तत्तं ?'**

भगवान ने कहा, **'विगमे इ वा'**

फिर वंदन कर पूछा, **'भयवं ! किं तत्तं ?'**

भगवान ने कहा, **'धुवे इ वा ।'**

जो उत्पन्न होता है, नाश होता हैं और ध्रुव होता हैं, वह तत्त्व है ।

इस त्रिपदी के श्रवण के साथ ही बीज बुद्धि के निधान श्री गौतम स्वामीजी भगवंत को श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म का अपूर्व क्षयोपशम हो गया, और उन्होंने सर्वाक्षर संनिपातिनी लब्धि से एक अन्तर्मुहूर्त में द्वादशांगी की रचना कर दी । वे उस चौदह पूर्व का स्वाध्याय एक अन्तर्मुहूर्त में कर सकते थें ।

गौतम स्वामी का दैनिक स्मरण

यद्यपि सुधर्मास्वामीजी का छद्मस्थ काल लंबा होने से भगवान महावीर की पाट परंपरा उन्हें सौंपी गई । वर्तमानकाल में जो भी श्रमण समुदाय हैं, उसके आद्य नायक सुधर्मास्वामी भगवंत है ।

प्रवचन समय जिस पाट पर बैठकर साधु भगवंत प्रवचन देते हैं, वह पाट भी सुधर्मास्वामीजी की ही कहलाती है ।

फिर भी मंगल के रूप में भगवान महावीर के बाद श्री गौतमस्वामी को ही याद किया जाता है ।

(1) ***मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः....।***

(2) रात्रि शयन के पूर्व सभी साधु-साध्वीजी भगवंत **'संथारा-पोरिसी'** पढ़ाते है । उस संथारा पोरिसि में भी **'नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं'** कहकर गौतम स्वामी भगवंत को याद किया जाता है ।

(3) प्रातः काल में राइ प्रतिक्रमण करते समय सभी साधु-साध्वी-श्रावक और श्राविका **'जग चिंतामणि'** का चैत्यवंदन करते है । इस चैत्यवंदन के रचयिता भी गौतमस्वामी ही है । अष्टापद तीर्थ के ऊपर गौतमस्वामीजी ने इस चैत्यवंदन की रचना की थी ।

पच्चक्खाण पारते समय एवं आहार ग्रहण के बाद जो चैत्यवंदन किया जाता हैं, उस चैत्यवंदन में भी श्री गौतमस्वामीजी के द्वारा विरचित **'जग चिंतामणि'** का ही चैत्यवंदन बोला जाता है ।'

(4) उपधान तप दरम्यान मंगल के लिए ऋषिमंडल स्तोत्र सुनाया जाता है, उस स्तोत्र के रचयिता भी **श्री गौतमस्वामी भगवंत** ही है । **(क्रमशः)**

स्वस्थ मन की सर्वोच्च शक्ति

वैराग्य दीप हृदय प्रदीप

लेखांक-33

विवेचनकार :– **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
नवोदित लेखक :– **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

तावत् सुखेच्छा विषयादि भोगे, यावन्मनः स्वास्थ्य सुखं न वेत्ति ।
लब्धे मनः स्वास्थ्य, सुखैकलेशे, त्रैलोक्यराज्येऽपि न तस्य वाञ्छा ।।33।।

शब्दार्थ

तावत्=तभी तक, **सुखेच्छा**=सुख की इच्छा, **विषयादिभोगे**=पांच इन्द्रिय के अनुकूल विषय भोग में, **यावत्**=जब तक, **मन**:=चित्त, **स्वास्थ्यसुख**=स्वस्थता का सुख, **न**=नहीं, **वेत्ति**=जानता है, **लब्धे**=प्राप्त होने पर, **मन:स्वास्थ्य सुखैकलेशे**=चित्त की स्वस्थता के सुख का एक अंश, **त्रैलोक्यराज्येऽपि**=तीन लोक के राज्य को पाने की भी, **न**=नहीं रहती है, **तस्य**=उसको, **वाञ्छा**=इच्छा ।

गाथार्थ

संसारी जीव को तभी तक पांच इन्द्रिय के विषय भोग की इच्छा रहती है, जब तक वह मानसिक स्वस्थता के सुख को जानता नहीं है । यदि एकबार उसे मानसिक स्वस्थता के सुख का एक अंश भी प्राप्त हो जाय, तो तीन भुवन के साम्राज्य से प्राप्त होने वाले सुख की भी इच्छा नहीं रहती है ।

विवेचन

जैसे एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती, एक गुफा में दो केशरी सिंह नहीं रह सकते हैं, वैसे ही एक मन में संसार के क्षणिक वैषयिक सुख का आकर्षण और मोक्ष के शाश्वत आत्मिक सुख का आकर्षण-दोनों नहीं रह सकते है । दोनों की दिशाएँ विपरीत है । वैषयिक सुख की प्राप्ति मन की चंचलता से होती है । जबकि मोक्ष के सुख की प्राप्ति मन की स्वस्थता से होती है । मन की स्वस्थता का प्रभाव बताते हुए ग्रंथकारश्री कह रहे है कि, **''संसारी जीव को तभी तक पांच इन्द्रिय के विषय भोगों के प्रति आकर्षण रहता है, जब तक वह मानसिक स्वस्थता का सुख नहीं जानता है । एक बार मानसिक स्वस्थता के सुख का अंश प्राप्त हो जाय तो उसे सामने से प्राप्त होने वाले तीनलोक के साम्राज्य के सुख की इच्छा भी नहीं रहती तो फिर तुच्छ विषय सुखों की इच्छा की तो क्या बात की जाय ।''**

जीवन में समस्त सुखों का कारण गुण है और समस्त दु:खों का कारण दोष है । सारे दोष मन के है और सारे गुण आत्मा के है । जब मन चंचल बनता है तब उसमें सारे दोष पैदा होते है और जब मन स्वस्थ बनता है अर्थात् स्व में स्थिर बनता है, चंचलता-मलीनता आदि दोषों से रहित समाधिस्थ बनता है तब वह आत्मिक भाव को पाकर सभी सद्गुणों का स्वामी बनता है और जीव शाश्वत सुख का भोक्ता बनता है । अत: सुख और दु:ख का मूल तथा बंधन और मुक्ति का मूल मन ही है । कहा जाता है-''**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो: ।** अर्थात्-मन ही मनुष्य के भवबंधन और भवमुक्ति का कारण है ।

संसारी जीवों के मन भिन्न भिन्न स्वभाव के है । विभिन्न प्रकार के स्वभाव के अनुसार मन के पांच भेद इस प्रकार है –

1) कठोर मन 2) संवेदनहीन मन 3) संवेदनशील मन 4) परोपकारी मन 5) स्वस्थ मन

1) कठोर मन :– जिस मन में मात्र अपने भौतिक सुख का विचार रहता है, अन्य के सुख-दु:ख की कोई चिन्ता नहीं होती बल्कि अन्य को दु:खी देखने पर खुशी होती है । दूसरों को दु:ख देने में, दूसरों को हैरान-परेशान करने में जिसे आनंद आता हो उस मन को कठोर मन जानना चाहिए । अपने क्षणिक और अति अल्प सुख के लिए किसी को दु:ख देने में कठोर मनवाले व्यक्ति को कोई दु:ख-दर्द का एहसास नहीं होता है । प्रहार करने पर पत्थर तो फिर भी टूट जाता है, परंतु कठोर मन वाला व्यक्ति तो पत्थर से भी ज्यादा कठोर होता है । उसके केन्द्र में मात्र अपना ही सुख होता है । अपने सुख प्राप्ति के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए वह किसी की परवाह नहीं करता । इन्द्रियजन्य सुखों को पाने के लिए वह हल्के से हल्का कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है । अपने सुख के लिए सुंदर रुप, संपत्ति और सत्ता को पाना चाहता है । उस चाहत को पूरी करने में बीच में आने वाले किसी को भी वह पसंद नहीं करता है । चाहे भाई हो, पिता हो, पत्नी हो या पुत्र हो अपने स्वार्थ के बीच में आने वाले किसी की हत्या करने अथवा करवाने में उसे तनिक भी संकोच या अफसोस नहीं रहता है । कठोर मन वाला जीव प्राय: करके हमेशा आर्तध्यान और रौद्रध्यान में लीन रहता है । मन की कठोरता के कारण ऐसा जीव मरकर नरक गति का महेमान बनता है ।

कठोर मन वाले व्यक्ति में किसी के प्रति दया का भाव नहीं होता । दया और दान के साथ उसे कोई सम्बन्ध नहीं होता । कदाचित् कभी किसी को कोई दान आदि करे तो भी उसमें अपने फायदे को ढुंढने का ही उद्देश्य रहता है । दान के पीछे भी व्यापार का ही लक्ष्य रहता है । देव-गुरु और धर्म के साथ कभी कोई स्नान-सुतक का भी संबन्ध नहीं होता । उसे सर्वत्र मात्र अपने सुख और सुख के साधन स्वरुप पैसे, यशकीर्ति और प्रशंसा ही प्रिय लगती है । कभी मंदिर तो कभी मस्जिद, प्रशंसा की भूख मिटाने के लिए वह सर्वत्र भटकता रहता है । फिर भी धर्म का अंश भी उसके मन को स्पर्श नहीं करता है । बडे-बडे उद्योग खडे कर उसमें अपार जीवहिंसा करता हुआ वह निरंतर पापों का ही बंध करता है ।

2) संवेदनहीन मन :– जिस मन में सुख को पाने की चाह तो है परंतु उसे पाने के लिए अन्य

के दु:ख का लेश भी विचार नहीं होता उस मन को संवेदन हीन मन कहते है । कठोर मन वाला जीव अपने सुख को पाने के लिए किसी की हिंसा करने के लिए तैयार होता है, जबकि संवेदनहीन मन वाले व्यक्ति में उतनी कठोरता नहीं होती कि वह किसी की हिंसा करे या करवाये, परंतु सुख के साधनों को पाने में होने वाली हिंसा के प्रति मन में कोई दु:ख-दर्द या संवेदना भी नहीं होती है । जैसे गाडी चलाते हुए कोई जानवर आदि मर गया तो वह उसमें अपनी गलती नहीं मानता । **''इसमें मेरी क्या गलती, यदि आँखें मूंदकर कोई चलेता तो मरेगा ही न ! मेरा क्या कसुर ?''** ऐसा कहकर छूटने की कोशिश करता है । कदाचित् लोगों के सामने अपनी बदनामी होते देख पैसे देकर छूट जाएगा, परंतु अपनी गल्ती का स्वीकार तो कदापि नहीं करेगा । वह यही मानता है कि **'गल्ती करे वे दूसरे, मैं कभी गल्ती नहीं करता ।'** स्वर्ग, नरक, परलोक, आत्मा आदि को नहीं मानता हुआ मात्र इस जीवन के सुख को पाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है । स्वयं हिंसा से होने वाले व्यापारों से बचकर झूठ, चोरी आदि में सहायक बनने वाले White collar व्यापार से पैसे कमाता है । राजनेता या वकील बनकर संवेदनहीन मन वाला व्यक्ति परंपरा से हिंसा आदि कार्य में जुडता है और अपने सुख के साधनों का संग्रह करते हुए हमेशा आर्तध्यान में लीन होकर प्राय: करके तिर्यंच गति में जाता है ।

3) संवेदनशील मन :– जिस मन में भौतिक सुख का आकर्षण होता है, सुख पाने के लिए प्रयत्न भी पूरा होता है परंतु उस सुख की प्राप्ति में जहाँ भी हिंसा का पापाचरण होता हो, उसे स्वीकार करने के लिए तैयार हो वह मन, संवेदनशील मन होता है । एक ओर अपने सुख के साधन की प्राप्ति के साथ जीवहिंसा होती हो तो दूसरी ओर जीवहिंसा से बचने के लिए सुख के साधन का त्याग करना पडता हो तो संवेदनशील मन वाला व्यक्ति अपने सुख के साधन का त्याग कर देता है परंतु जीवहिंसा के पाप में प्रवेश भी नहीं करेगा । ऐसे जीवों को पूर्ण रुप से धर्म ही प्रिय हो, ऐसा तो नहीं है, परंतु धर्म की बातों पर विश्वास, आत्मा, परलोक, नरक-स्वर्ग पर श्रद्धा होती है । **''बडे पाप व्यापारों के द्वारा आत्मा को नरकादि दुर्गति में खूब दु:ख सहन करने पडते है''** ऐसे धर्मोपदेश पर श्रद्धा करते हुए वह पापाचरण करने से डरता है । साथ ही भौतिक सुखों का आकर्षण तो होता है इसलिए न्याय-नीति पूर्वक पैसा कमाकर, उसे व्यापार, दान और भोग के कार्यों में निश्चित रुप से जोडकर विवेकपूर्ण आचरण करता है । विनय, विवेक, दया आदि सद्गुणों के आधार पर वह जीव प्राय: करके मनुष्य गति प्राप्त करता है ।

4) परोपकारी मन :– जिस मन में स्वयं के भौतिक सुख की अपेक्षा अन्य जीवों के सुख की चिन्ता अधिक होती है वैसा मन, परोपकारी मन कहलाता है । धर्म के मर्म को समझने के बाद संसार में परिभ्रमण करते जीवों के दु:खों को देखकर उसका मन द्रवित हो उठता है । मात्र बाह्य दु:ख नहीं बल्कि उसका बस चले तो वह सभी जीवों के भीतर रहे दोषों को दूर कर दे और सभी को शाश्वत सुखी बना देने की मनोकामना करता हैं । यदि वह संसार में रहता हैं तो अपने पैसों के बल पर अन्य जीवों के बाह्य दु:खों को दूर करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहता है । यदि वह संसार का त्याग करता है तो संसारवर्ती सभी जीवों के दु:ख और दोषों को दूर करने की शुभ भावना के साथ विशिष्ट तप-साधना के माध्यम से तीर्थंकर नाम कर्म का बंध करता है । कदाचित् भावना या तप साधना इतनी विशिष्ट न हो तो गणधर, चक्रवर्ती, राजा आदि बनने के योग्य विशिष्ट पुण्य का उपार्जन करता है । सराग संयम की साधना और

धर्मध्यान के बल पर ऐसी आत्मा देवलोक में जाकर अगले भव में विशिष्ट योग्यता धारक बनकर स्व-पर के आत्महित में लीन बनती है और परंपरा से मुक्ति सुख को प्राप्त करती है ।

5) स्वस्थ मन :– जिस मन में पांच इन्द्रियों के विषय भोगों के प्रति आकर्षण का सर्वथा अभाव है और जो समाधि साधना में स्थिर बना है वह मन, स्वस्थ मन है । पांच इन्द्रियों के विषय विष से भी भयंकर है ऐसा प्रतीत होने के बाद साधक आत्मा उससे विमुख बनकर आत्मिक सुख को पाने के लिए प्रयत्नशील बनता है । राग-द्वेष की भयंकरता उसे बडे रोगों से भी अधिक भयंकर लगती है, जिससें राग-द्वेष के द्वंद्व से मुक्त होकर समाधि की भद्रंकरता से आकर्षित होकर स्वस्थ मन से साधक समाधि पाने का प्रयत्न करता है । वह हमेशा मोक्ष सुख को पाने के लिए निश्चल मन वाला होकर संसार का त्याग कर श्रमण धर्म की आराधना करता है । अनादिकाल की विषयतृष्णा जो जीवात्मा को पांच इन्द्रिय के सुखों को पाने लालायित करती थी, ऐसी विषय तृष्णा को चारित्र रुपी महाशस्त्र से चूर-चूर कर देता है ।

जो स्पर्शनेन्द्रिय कोमल गद्दी-तकिये और स्त्री के भोग सुखों से प्रसन्न बनती थी, वह साधक कठोर भूमि और तृण से बने संथारे और आसन के तीखे स्पर्श में आनंद अनुभव करता है । आतापना लेकर आत्मा को प्रसन्न करती है ।

जो रसनेन्द्रिय छह विगई से भरपूर मीठे-मधुर पक्वान्न और तीखे-चटपटे व्यंजनों से पुष्ट होकर अन्य सभी इन्द्रियों को विकृत करती है, उसे साधक छह विगई से रहित भिक्षा वृत्ति से प्राप्त निर्दोष आहार से दंडित करता है । यथाशक्ति, उपवास आदि कठोर तपश्चर्या करके सभी इन्द्रियों पर विजय पाने के लिए बार-बार वार करता है ।

जो घ्राणेन्द्रिय सुगंधी कपूर, चंदन, केशर, कस्तुरी आदि के विलेपन, इत्र, गुलाबजल, बाग-बगीचे के माहौल में रहकर खिल खिलाती थी, उसे साधक सभी प्रकार के सुगंधी द्रव्यों का त्याग कर शांत करती है । शरीर पर विलेपन तो दूर की बात है, जीवन भर स्नान का त्याग कर शरीर पर पसीने और मैल जमने पर भी ब्रह्मचर्य का पालन करता है ।

जो चक्षुरिन्द्रिय गीत-गान और वाद्ययंत्र के ताल पर नाचती हुई नर्तकी के नाच, नाटक, T.V. सिनेमा आदि को देखकर प्रमुदित होती थी उसे साधक आँखों से देखने की बात तो दूर मन में भी स्मरण की कामना नहीं करता है । प्रभु दर्शन, मार्ग में चलते हुए नीची नजर, जीवरक्षा, स्वाध्याय करने आदि के माध्यम से संयमित करती है । कदाचित् आँखों के सामने किसी स्त्री का दृश्य आ भी जाय तो मध्याह्न के सूर्य के सामने चली गई दृष्टि की तरह उसे तुरंत घुमा देता है ।

जो श्रोत्रेन्द्रिय बांसुरी, वीणा, ढोल और वाद्ययंत्र के तालबद्ध संगीत और गीतगान से खुश होती थी, उसे साधक जिनवाणी के श्रवण में तल्लीन करता है ।

प्राप्त हुई इन पांचों इन्द्रियों से आत्मविकास के पथ पर चलता हुआ साधक अपने मन को स्थिर कर क्षपक श्रेणी पर आरुढ होकर सिद्धि पद को प्राप्त करती है ।

आत्मा के अनंत साम्राज्य को प्रदान करता स्वस्थ मन यदि अल्प काल के लिए भी जीवात्मा को प्राप्त हो जाय, तो उसे संसार के अन्य किसी भी सुख को पाने की इच्छा या आकांक्षा नहीं रहेगी ! (क्रमशः)

शांत सुधारस

जीवन में शांति का उपाय

विवेचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

2. **ममता का त्याग :-** ममता ही आत्मा के परिभ्रमण और सर्व दु:खों का मूल है । संसार के सुख की ममता से आत्मा के विवेक-चक्षु बन्द हो जाते हैं और आत्मा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाती है । **पूज्य यशोविजयजी म.** ने ठीक ही कहा है-

जाति से (जन्म से) अन्ध व्यक्ति तो जो पदार्थ है, उसे नहीं देखता है किन्तु जो ममता से अन्ध बना हुआ है वह तो जो जिस रुप में नहीं है, उसे उस रुप में देखता है । यही जन्मान्ध और ममतान्ध में भेद है ।

जाति (जन्म) से अन्ध होना विशेष हानिकर नहीं है, किन्तु जो ममतान्ध बन जाता है, वह तो बहुत कुछ खो देता है ।

ममता से अन्ध व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ।

ठीक ही कहा है-**'रागी दोषान् न पश्यति ।'** रागी-आसक्त व्यक्ति वस्तु में रहे दोष को जान नहीं सकता है । अत: जो आत्मा इस ममता का त्याग कर देती है और समता को प्राप्त कर लेती है, वह आत्मा इस संसार में अत्यन्त निर्भय बन जाती है । फिर संसार के सुख या दु:ख उसे परेशान नहीं कर सकते ।

3. **शान्त सुधारस का पान :- शान्त सुधारस** का पान आत्मा को सुख के सागर में मग्न कर देता है । आत्मा तभी तक अशान्त रहती है, जब तक वह शान्त रस का पान नहीं करती है ।

पूज्य उमास्वातिजी महाराज ने शान्त रस से भरपूर **'प्रशमरति'** ग्रन्थ की रचना की है । उस ग्रन्थ में उन्होंने लिखा है कि-

प्रशमितवेदकषायस्य, हास्यरत्यरतिशोकनिभृतस्य ।
भयकुत्सानिरभिभवस्य, यत्सुखं तत्कुतोऽन्येषाम् ।।

अर्थात्–जिसने वेद और कषाय के उदय को उपशान्त कर दिया है और हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा आदि का पराभव कर दिया है, वह आत्मा जिस सुख का अनुभव करती है, वह सुख अन्य के लिए कहाँ है ?

क्रोध-मान-माया और लोभ इन चार कषायों के शमन से आत्मा शान्त बनती है । पाँच इन्द्रियों के अनुकूल विषयों के परित्याग से आत्मा शान्ति के महासागर में अवगाहन करती है ।

कितना सुन्दर और सचोट उपाय बतला दिया है **पूज्य उपाध्यायजी महाराज** ने ।

रोग तो बतला दे किन्तु इलाज न करे तो वह डॉक्टर प्रशंसनीय नहीं बनता है, किन्तु रोग की पहचान के बाद जो रोग-मुक्ति का उपाय भी बतलाता है, वही डॉक्टर आदरणीय बनता है ।

पूज्य उपाध्यायजी महाराज मृत्यु का रोग बतलाकर उससे मुक्ति का उपाय भी बतला रहे हैं । इस रोग और रोग के इलाज को बतलाकर **पूज्य उपाध्यायजी महाराज** ने महान् उपकार किया है । इस **शान्त सुधारस** का जो अमीपान करेगा, इसे आत्मसात् करने का प्रयास करेगा वह अवश्य ही अल्प भवों में शिव-सुख का भोक्ता बन जाएगा ।

अमृत वही है, जो व्यक्ति को अमर बनाता है । **शान्त सुधारस** एक ऐसा ही अमृत है, जिसके पान से आत्मा अमरत्व को प्राप्त कर सकती है ।

आप भी यह अमृतपान करें और अमरत्व को प्राप्त हों जाए ।

3. संसार भावना

एक ओर लोभ का भयंकर दावानल सुलगा हुआ है, जिसे बढ़ते हुए जलरुपी लाभ से किसी भी तरह से शान्त नहीं किया जा सकता है तथा दूसरी ओर इन्द्रियों की तृष्णा, मृगतृष्णा की भाँति परेशान कर रही है । इस प्रकार विविध प्रकार के भयों से भयंकर इस संसार रुपी वन में स्वस्थ कैसे रहा जा सकता है ?

लोभ और तृष्णा का आतंक

संसार एक नाटक की रंग-भूमि है, जहाँ जीवात्मा कर्म के नेतृत्व में विविध प्रकार के पात्र भजती है । कभी आत्मा मानव के रुप में जन्म लेती है तो कभी पशु के रुप में । एक ही आत्मा कभी पुरुष-देह को धारण करती है तो कभी स्त्री-देह को । आत्मा स्वयं न पुरुष है, न स्त्री । स्त्री-पुरुष का भेद कर्मकृत है । आत्मा न देव है, न मनुष्य और न नारक ना तिर्यंच । किन्तु कर्म के अनुसार वह विविध देहों को धारण करती है और नाना प्रकार के दु:खों की भोक्ता बनती है ।

प्रस्तुत संसार-भावना के अन्तर्गत **पूज्य उपाध्यायजी महाराज** संसार का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत कर रहे हैं ।

दावानल के सन्दर्भ में आपने सुना ही होगा । जब जंगल में भयंकर आग सुलग जाती है, तब उसे किसी भी प्रकार से शान्त करना अशक्य हो जाता है । इस दावानल में चारों ओर से आग की इतनी अधिक प्रबलता होती है कि वन के सभी विराट्काय वृक्ष भी जलकर भस्मसात् हो जाते हैं । दावानल के सुलगने के बाद किसी भी प्राणी का उसमें से बचना अशक्य हो जाता है । दावानल की लपटों में जीवात्मा अपने जीवन को स्वाहा कर देती है । इस भयंकर दावानल को जल के छिड़काव से शान्त नहीं किया जा सकता है ।

बस ! वन में दावानल की भाँति ही इस संसार में लोभ का दावानल सुलगा हुआ है । इस लोभ ने सम्पूर्ण संसार में असन्तोष की आग फैला दी है, जिसे किसी भी प्रकार से शान्त करना शक्य नहीं है । कितना ही धन मिल जाए.....कितनी ही समृद्धि मिल जाए.....कितना ही वैभव मिल जाए.....कितनी ही सुविधाएँ मिल जाएँ, परन्तु लोभ के वशीभूत आत्मा कभी तृप्त नहीं होती है । इस लोभ की आग ने सबको बेचैन बना दिया है और आश्चर्य है कि इस लोभ के दावानल को शान्त करने के लिए ज्यों-ज्यों इच्छा-पूर्ति होती जाती है, त्यों-त्यों इस लोभ की आग बढ़ती ही जाती है ।

- मम्मण सेठ के पास इतना अधिक धन था कि जिसके आगे श्रेणिक की समृद्धि भी नगण्य थी । परन्तु मम्मण लोभ की आग में फंसा हुआ था । जिस प्रकार खुजली का रोगी ज्यों-ज्यों खुजलाता है, त्यों-त्यों शान्ति के बजाय उसकी खुजली बढ़ती जाती है, उसी प्रकार मम्मण के पास इतनी अधिक समृद्धि होते हुए भी वह सदा अतृप्त ही था । अधिकाधिक धन-समृद्धि को पाने के लिए वह तनतोड़ मेहनत करता था ।

अमावस्या की घनघोर रात्रि में भयंकर मुसलाधार वर्षा हो रही थी । चारों ओर नगर में पानी भरा हुआ था और नदियों में भयंकर बाढ़ आई हुई थी । राजमार्ग पर न तो कोई मनुष्य ही दिखाई दे रहा था और न ही कोई पशु । परन्तु ऐसी भीषण बाढ़ में भी एकमात्र पुरुषार्थ करने वाला था तो एक मम्मण सेठ । एकमात्र लंगोटी पहनकर वह उस नदी की बाढ़ में कूद पड़ा था और नदी में बहती हुई लकड़ियों को खींच-खींचकर किनारे ला रहा था । कैसी दयनीय स्थिति थी ? वह मौत से खेल रहा था । परन्तु उसको उसी में आनन्द था, क्योंकि लोभ ने उसके हृदय पर अधिकार जमा रखा था । लोभ की बढ़ती हुई आग को शान्त करने के लिए वह सतत पुरुषार्थ कर रहा था, परन्तु उसे यह ख्याल नहीं कि **'लाभ से लोभ का शमन कभी सम्भव नहीं है ।'** वस्तु की प्राप्ति से तो उलटा लोभ प्रबलतर होता है ।

पूज्य आचार्य भगवंत का आगामी कार्यक्रम

- दि. 27 जनवरी से 31 जनवरी 2026 तक ओसवाल जैन संघ-बाली की ओर से भव्य पंचाह्निक-महोत्सव ।
- दि. 18 से 20 फरवरी 2026 तक सेवाडी (राज.) में जिनमंदिर की ध्वजा एवं पूज्य आचार्य भगवंत के स्वर्णिम वर्ष की अनुमोदनार्थ **'त्रिदिवसीय भक्ति-महोत्सव'** ।
- दि. 8 से 10 मार्च 2026 तक जीवाणा (जिला-जालोर) में **पू. आचार्य भगवंत के स्वर्णिम वर्ष** की अनुमोदनार्थ एवं पू. बालमुनि का जन्मभूमि में प्रथम बार आगमन निमित्त त्रिदिवसीय जिन भक्ति महोत्सव ।
- दि. 22 मार्च सुमेरपुर नगर प्रवेश एवं नवपद ओली का भव्य आयोजन ।

शासन प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा 5 की शुभ निश्रा में उदयपुर नगर में यशस्वी चातुर्मास, महावीर विद्यालय में उपधान तप एवं उदयपुर से दयालशाह किल्ला तीर्थ का भव्य छ'री पालक संघ संपन्न होने के बाद दि. 3 दिसंबर को 10 कि.मी. विहार कर अंबिका मार्बल-केलवा पधारे ।

दि. 4 दिसंबर को 10 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री नाकोडा पार्श्वनाथ धाम पडासली पधारे । प्रात: 9.45 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । शाम को पडासली गांव में पधारे । दि. 5 दिसंबर को प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 6 दिसंबर को 13 कि.मी. विहार कर हिमाचल नगर जैन तीर्थ में पधारे । 5 दिन तक तीर्थ में स्थिरता रही ।

दि. 11 दिसंबर को 2 कि.मी. विहार कर चारभूजा पधारे । श्री आदिनाथ जैन संघ चारभूजा द्वारा गाजे-बाजे के साथ बस स्टेन्ड से पूज्यश्री का सामैया किया गया । मार्ग में बाबुलालजी राठोड के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । फिर मंदिरजी में दर्शन के बाद आराधना भवन में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद बाबुलालजी राठोड परिवार की ओर से 50 रुपये की प्रभावना एवं स्वामी वात्सल्य का लाभ लिया गया । श्री संघ द्वारा उनका बहुमान किया गया ।

दि. 12 दिसंबर को प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद सामुहिक रुप से 30 रुपये की प्रभावना हुई ।

दि. 13 दिसंबर को 5 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री पोष दशमी निमित्त झीलवाडा पधारे । श्री आदिनाथ जैन संघ-झीलवाडा एवं परम गुरुभक्त मगनभाई ऋषभगोता कोठारी परिवार ने गाजते-बाजते पूज्यश्री का सामैया किया । फिर दो दिन प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए । दोनो दिन 50-50 रुपये की प्रभावना हुई ।

संयम वंदनावली

दि. 15 दिसंबर को प्रात: 10.00 बजे से 1.30 बजे तक श्री पार्श्वनाथ प्रभु के दीक्षा कल्याणक एवं **पूज्य आ. श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के संयम सुवर्ण वर्ष में मंगल प्रवेश की अनुमोनार्थ संयम वंदनावली का भक्ति संगीत मय कार्यक्रम हुआ । मुण्डारा से आये संगीतकार प्रकाशभाई वर्मा ने सभा को गुरु भक्ति में जोडा । **पू.मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** एवं **पू. मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** ने पूज्यश्री के संयम जीवन के अनेक प्रसंगों का वर्णन किया । गुरुपूजन का चढावा **81,000 रुपये में श्री विनयचंदजी डालचंदजी हिंगड परिवार** ने लेकर गुरुपूजन किया । **अक्षत वधामना का चढावा 48,000 रुपये में मातुश्री जडावबाई भेरुलालजी ऋषभगोता कोठारी परिवार** ने लेकर पूज्यश्री के प्रवचन के बाद अक्षत वधामणा किये । इस प्रसंग पर मुंबई

आदि क्षेत्रों से 150 युवान एवं आस-पास के गावों से लोग पधारे थे । कार्यक्रम के बाद सभी का स्वामी वात्सल्य एवं 50 रुपये की प्रभावना हुई ।

शाम को **मगनलालजी ऋषभगोता कोठारी परिवार** की ओर से मंदिरजी में तीनों मूलनायक भगवान की सोने के वर्क से अंगरचना की गई ।

दि. 16 दिसंबर को प्रात: 10.00 बजे श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले मगनभाई ऋषभगोता कोठारी के गृहांगण में हुए । साथ ही पूज्यश्री का प्रासंगिक प्रवचन हुआ ।

देसूरी-मारवाड प्रवेश

दि. 17 दिसंबर को 13 कि.मी. विहार कर देसूरी पधारे । श्री जैन संघ देसूरी के द्वारा पूज्यश्री का सामैया किया गया । सामैया के बाद **श्री संघ की नवकारशी का लाभ अमृतलालजी चोथमलजी कांगरेचा परिवार** द्वारा लिया गया । फिर 10.15 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद 50 रुपये की प्रभावना और कांताबेन उगमराजजी नवलखा, मोतीलालजी कांगरेचा एवं गिरीश पोरवाल के गृहांगण में गाजते-बाजते पूज्यश्री के पगले हुए ।

दि. 18 दिसंबर को प्रात: 10.00 बजे पूज्यश्री का प्रवचन एवं 60 रुपये की प्रभावना हुई तथा गाजते-बाजते अमृतलालजी चोथमलजी कांगरेचा के गृहांगण में पधारे ।

दि. 19 दिसंबर को प्रात: 10 बजे पूज्यश्री का प्रवचन एवं 60 रुपये की प्रभावना हुई तथा गाजते-बाजते कुमारपालभाई पोरवाल एवं पारसमलजी भभूतमलजी पुनमिया के गृहांगण में पगले हुए । दोपहर 2.30 बजे श्री संभवनाथ जिनालय में टोडरमलजी दानमलजी की ओर से पंच कल्याणक पूजा पढाई गई ।

दि. 20 दिसंबर को प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री के संयम सुवर्ण वर्ष में मंगल प्रवेश की अनुमोदनार्थ संयम वंदनावली का कार्यक्रम हुआ । कार्यक्रम का लाभ स्व. हुकमराजजी शेषमलजी नवलखा परिवार की ओर से लिया गया । **पू. मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म., पू. मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म.** एवं **पू. मुनिश्री विपुलपुण्यविजयजी म.** ने पूज्यश्री के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया । संगीतकार मोतीलालजी नाहर ने संयम भावयात्रा की संगीतमय प्रस्तुति की । कुमारपालभाई पोरवाल ने अपने मनोगत भाव प्रस्तुत किये । अंत में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद गुरुभगवंत के अक्षत वधामणा किये गए । कार्यक्रम के बाद 150 रुपये की प्रभावना एवं संघ स्वामिवात्सल्य हुआ । तथा मोतीलालजी तिलोकचंदजी नाहर के गृहांगण में पगले हुए ।

दि. 21 दिसंबर को 6 कि.मी. विहारकर कीर्ति स्तंभ-घाणेराव पधारे ।

सादडी प्रवेश

दि. 22 दिसंबर को 8 कि.मी. विहारकर सादडी पधारे । दिन भर की स्थिरता महेन्द्रभाई सुदेशा के गृहांगण में हुई । प्रात: 9.45 बजे न्याती नौरा-उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादार्थ प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद प्रमोदजी रांका के गृहांगण में श्रीसंघ के साथ गाजते-बाजते पूज्यश्री के पगले हुए ।

त्रिदिवसीय महोत्सव

दि. 23 दिसंबर से पूज्यश्री **रत्नसेनसूरिजी म.सा.** के **संयम सुवर्ण वर्ष में मंगल** प्रवेश की अनुमोदनार्थ

श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ-समिति सादडी की ओर से त्रिदिवसीय प्रभु भक्ति गुरु भक्ति महोत्सव का मंगल आयोजन हुआ ।

प्रात: 9.15 बजे गणेश चौक से भव्य प्रवेश यात्रा का सामैया प्रारंभ हुआ । अशोक बेन्ड-बिजापुर की रमझट के साथ सभी गुरु भक्त नाचते हुए गुरु भक्ति में जुडे । महिला मंडल की बहनों ने नूतन मंगल कलश लेकर प्रदक्षिणा दी । इस प्रवेश यात्रा के साथ सादडी के ही दीक्षार्थी मुमुक्षु संतोषभाई एवं सोनलबेन परमार का वर्षीदान वरघोडा हुआ । पावापुरी जिनालय एवं चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय आदि राजमार्ग से प्रसार होते हुए 10.30 बजे पाटी उपाश्रय में सामैया संपन्न हुआ । मार्ग में गुरुभक्त मातुश्री रतनबाई धनराजजी रांका (तुषारभाई रांका) परिवार के गृहांगण में श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले हुए ।

पाटी-उपाश्रय में धर्मसभा का आयोजन हुआ । अमदाबाद से पधारे संकेतभाई शाह ने सभा का संचालन करते हुए सभी को पूज्यश्री का जीवन परिचय दिया । संगीतकार किशोरभाई ने भक्ति संगीत में जोडा । फिर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद पूज्यश्री द्वारा आलिखित 261 वीं पुस्तक **शंका-समाधान भाग-5** का भव्य विमोचन पुस्तक प्रकाशन के लाभार्थी गजराजजी जैन, तुषारभाई रांका, कपिलभाई रांका, बाबूलालजी, महेन्द्रजी सन्देशा, दिनेशभाई जैन आदि ने किया । अंत में मुमुक्षु संतोषभाई एवं सोनलबेन का श्री संघ की ओर से बहुमान किया गया । कार्यक्रम के बाद 50 रुपये की प्रभावना हुई । तीनों दिन श्री संघ द्वारा तीनों टाइम के स्वामी वात्सल्य का आयोजन हुआ । दोपहर 12 बजे भरतचक्री भोजन वाटिका का उद्घाटन मातुश्री पानीबाई केशरीमलजी रांका परिवार की ओर से किया गया । प्रात: नवकारशी का लाभ फूलचंदजी फोजमलजी सुंदेशा परिवार, दोपहर स्वामी वात्सल्य का लाभ मातुश्री पानीबाई केसरीमलजी रांका परिवार एवं चोविहार का लाभ मणीबाई हरकचंदजी पालरेचा परिवार ने लिया ।

दि. 24 दिसंबर को प्रात: 9.30 बजे धर्मसभा का आयोजन हुआ । प्रारंभ में **मुनिश्री शालिभद्र-विजयजी** एवं **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी** का गुरु गुणानुवाद प्रवचन हुआ । अंत में पूज्यश्री का रात्रि भोजन त्याग आदि गुण पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद गाजते-बाजते श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले विजयराजजी केशरीमलजी एवं जुगराजजी कपुरचंदजी राठोड के गृहांगण में हुए ।

दोपहर 12.39 बजे मातुश्री पुष्पाबाई मांगीलालजी हींगड परिवार की ओर से महामंगलकारी श्री सिद्धचक्र महापूजन का पढाया गया । विधिविधान हेतु विरलभाई शाह-शिवगंज से पधारे । प्रात: नवकारशी एक सद्गृहस्थ, दोपहर का स्वामी वात्सल्य पृथ्वीराजजी उत्तमचंदजी बाफना परिवार एवं चौविहार का लाभ मनमंदिर ग्रुप ने लिया । शाम को पावापुरी मंदरिजी में संध्या भक्ति का लाभ मातुश्री घीसीबाई मुकनचंदजी रांका परिवार ने लिया ।

दि. 25 दिसंबर को प्रात: 9.30 बजे **'संयम संवेदना'** का भव्य कार्यक्रम हुआ । चेतनभाई मेहता ने संवेदना द्वारा पूज्य आचार्यश्री के आराधना स्वरुप नित्य एकासना, प्रत्येक शुक्ल पंचमी के दिन उपवास एवं आचार्य पदवी के पूर्व प्रतिदिन वर्धमान विद्या का एवं आचार्य पदवी के बाद सूरि मंत्र का जाप, है सूरिमंत्र की पांच पीठिकाए प्रतिदिन सुबह-शाम

मांडली में खडे-खडे प्रतिक्रमण आदि आराधना, प्रभावकता स्वरुप लगभग 50 हजार किलोमिटर से अधिक भारत के छह राज्यों में विचरण, हर क्षेत्र में प्रभावक प्रवचन के द्वारा जन-जन में संस्कारो का सिंचन, 18 दीक्षाएँ, 4 अंजन शलाका का प्रतिष्ठा, 13 छरी पालक संघ, 19 उपधान तप, 1 पालिताणा की नव्वाणु आदि के माध्यम से जैन शासन की सुन्दर प्रभावना की है ।

रक्षा स्वरुप हिन्दी भाषा में आलिखित 261 पुस्तकों का वर्णन किया । भारत में मुंबई एवं गुजरात राज्य को छोड शेष सभी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा चलती है । इन सभी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा में धार्मिक पुस्तकों के माध्यम से जन-जन के संस्कारों की सुरक्षा का कार्य पूज्यश्री के द्वारा किया गया ।

थाना से पधारे कर्मठ कार्यकर्ता सुरेशभाई गुंगालिया ने आचार्य पदवी प्रसंग का स्मरण कराकर पूज्यश्री के संयम जीवन की हार्दिक बधाई दी ।

इस प्रसंग पर पूज्यश्री के गुरुपूजन का चढावा 75,175 रुपये में मातुश्री पुष्पाबेन मांगीलालजी हिंगड एवं स्व. गौतमकुमार मुलतानमलजी राठोड ने लिया । कामली अर्पण तथा अक्षत वधामणा का चढावा 81,181 रुपये में मातुश्री पतनबाई रुपचंदजी रांका, भेरुलालजी पुखराजजी रांका, बबीबाई हमीरमलजी पालरेचा एवं फूलचंदजी फौजमलजी सुंदेशा परिवार ने लिया ।

श्री संघ के अध्यक्ष गजराजजी जैन ने अपने मनोगत भाव व्यक्त कर पूज्यश्री को बधाई एवं सकल संघ का आभार प्रकट किया ।

अंत में पूज्यश्री का '**मानव जीवन की सफलता**' पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद संयम जीवन की सच्ची अनुमोदना स्वरुप संयम प्राप्ति तक किसी भी एक मिठाई या एक फल के त्याग का अभिग्रह दिया ।

फिर चढावे के लाभार्थी परिवारों ने गुरुपूजन कर कामली अर्पण कर पूज्यश्री को अक्षत से बधाया । कार्यक्रम के बाद गुड की प्रभावना हुई । नवकारसी का लाभ गौतमकुमार मुलतानमलजी राठोड, दोपहर स्वामी वात्सल्य सुंदरबाई लालचंदजी रांका एवं चौविहार का लाभ-बबीबाई हमीरमलजी पालरेचा परिवान ने लिया ।

शाम को 6.00 बजे गाजते-बाजते श्री पूज्यश्री के पगले जितेन्द्रभाई धोका एवं दीपकभाई बंबोली के घर पगले फिर श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय में भव्यमहापूजा दीपक रोशनी एवं 108 दीपक की आरती हुई । मातुश्री लीलाबाई बाबुलालजी धोका परिवार ने महापूजा का लाभ लिया ।

घाणेराव में त्रिदिवसीय महोत्सव

दि. 26 दिसंबर को 10 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री घाणेराव नगर में पधारे । यहाँ भी पूज्यश्री के संयम स्वर्णिम वर्ष में मंगल प्रवेश की अनुमोदनार्थ त्रिदिवसीय देव-गुरु भक्ति महोत्सव का आयोजन हुआ । प्रात: 9.30 बजे आशा महेशजी होस्पिटल से पूज्यश्री का गाजते-बाजते भव्य सामैया प्रारंभ हुआ । श्री संघ की श्राविकाओं ने मंगल कलश लेकर प्रदक्षिणा देकर शुभ सगुन दिये । लक्ष्मी म्युजिकल बेन्ड-घाणेराव की रमझट में नाचते-झूमते गुरुभक्तों ने पूज्यश्री का भव्य स्वागत किया । 10.45 बजे जैन उपाश्रय में धर्मसभा का आयोजन हुआ । प्रारंभ में श्री संघ के सेक्रेटरी विनोदजी लोढा ने पूज्यश्री का संक्षिप्त परिचय दिया । मुंबई से पधारे सुप्रसिद्ध संगीतकार राजेशभाई जैन एवं रामलालभाई

घाणेराव ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सभा को लीन किया । अंत में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद 100 रुपये की प्रभावना हुई । आज के दिन तीनों टाइम के स्वामीवात्सल्य का लाभ जितेन्द्रभाई जुगराजजी पुनमिया ने लिया ।

दि. 27 दिसंबर को प्रातः 9.30 बजे संयम वंदनावली का कार्यक्रम हुआ । संवेदना हेतु अमदाबाद से केतुलभाई शाह ने अपनी रोचक शैली में जिनशासन को प्राप्त हुए राजस्थानी शासन प्रभावक सूरि भगवंतों का वर्णन कर, इस शृंखला में हमें प्राप्त हुए पूज्य **आ.श्री रत्नसेनसूरिजी म.सा.** का बचपन से दीक्षा तक के प्रेरणादायी प्रसंगों का वर्णन किया । संगीतकार रामलाल ने सुमधुर संगीत प्रस्तुत किया । गुरु पूजन का चढावा 51,000 में राजेन्द्रभाई मोतीलालजी लोढा परिवार एवं कामली अर्पण, अक्षत वधामणा एवं पुस्तक विमोचन का चढावा 6.51 लाख में जितेन्द्रभाई कांतिलालजी पुनमिया परिवार ने लिया । लोढा परिवार ने गुरुभगवंतों का गुरुपूजन किया ।

फिर पूज्यश्री का **चारित्र धर्म की महिमा** विषय पर प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद कामली अर्पण, पूज्यश्री द्वारा आलिखित 263 वीं पुस्तक **''प्रवचन का अमृत''** विमोचन एवं अक्षत वधामणा जितेन्द्रभाई पुनमिया परिवार की ओर से किया गया । कार्यक्रम के बाद 50 रुपये की प्रभावना हुई । आज के दिन तीनों टाइम के स्वामी वात्सल्य का लाभ मातुश्री लीलाबाई मोहनराजजी कांठेर परिवार ने लिया ।

दि. 28 दिसंबर को 9.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद घाणेराव के 13 जिनालयों में एक साथ अठारह अभिषेक हुए । आज के दिन के तीनों टाइम के स्वामी वात्सल्य का लाभ श्रीमती आशाबेन महेशजी हिंगड परिवार ने लिया ।

दि. 29 दिसंबर को 14 कि.मी. विहार कर पूज्यश्री नारलाई पधारे । प्रातः 8.00 बजे श्री जैन संघ-नारलाई द्वारा गाजते-वाजते पूज्यश्री का सामैया किया गया । फिर 10.15 बजे उपाश्रय में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद गाजते-बाजते श्री संघ के साथ पूज्यश्री के पगले महेशभाई बाफना के गृहांगण में हुए ।

दि. 30 दिसंबर को 12 कि.मी. विहारकर अपने संयम जीवन में प्रथम बार निपल नगर में पधारे पूज्य **आ.श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** संयम जीवन के **स्वर्णिम वर्ष में प्रवेश** अनुमोदनार्थ नूतनदीक्षित मुनि श्री पुण्यबलविजयजी म.सा. के सांसारिक सम्बन्धी मातुश्री बदामीबेन लालचंदजी भंसाली परिवार द्वारा गाजते-बाजते भव्य स्वागत किया गया । तत्पश्चात् 10.15 बजे भक्ति संगीत के साथ संयम वंदनावली का कार्यक्रम हुआ । अमदाबाद से पधारे भव्यभाई शाह ने भाववाही संवेदना एवं भक्ति संगीत प्रस्तुत किया । अंत में **मु.श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** का प्रवचन हुआ । अंत में पूज्यश्री को भंसाली परिवार का ओर से अक्षत वधामणा एवं कामली अर्पण की गई ।

दि. 31 दिसंबर को प्रातः 10 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । दोनों दिन मात्र 22 घरों के छोटे गांव में 60 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही । दोनों दिन तीन टाइम के स्वामी वात्सल्य का लाभ **मातुश्री बदामीबाई लालचंदजी भंसाली परिवार** ने लिया ।

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

To,

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of
DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4,
Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E),
Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor,
Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar
Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN